खुशहाल बच्चे

अरविन्द गुप्ता

पुणे शहर में सारस बाग के सामने एक नायाब संस्था है - गरवारे बाल भवन। यहां बच्चे स्कूल खत्म होने के बाद आकर बहुत से खेल खेलते हैं और तमाम सृजनात्मक गतिविधियों में भाग लेते हैं। एक बहुत संवेदनशील शिक्षाविद् शोभा भागवत ने 25 वर्ष पहले इस 'उत्कृष्ट केंद्र' की स्थापना की और धीरे-धीरे इसका दायरा बढ़ा। यह बाल केंद्र पुणे म्यूनिसिपल कॉरपोरशन की 2-एकड़ जमीन पर स्थित है। इमारत के नाम पर एक बड़ा हॉल है जिसको 25 साल पहले गरवारे ट्रस्ट ने बनवाया था।

बालभवन की स्थापना के पीछे एक सच्ची सामाजिक जरूरत थी। बच्चों के लिए ऐसे बहुत कम सुरक्षित स्थान हैं जहां वो खेल सकें, या फिर अपनी छिपी सृजनशक्ति को व्यक्त कर सकें। इस प्रकार की संस्था को चलाने के लिए संवेदनशील लोग कहां से मिलेंगे? शुरू में बहुत से बच्चों की माताओं ने स्टॉफ बतौर काम किया। साथ में कुछ युवा लड़कियों को भी प्रशिक्षित किया गया। इन कार्यकर्ताओं ने शोभा के साथ बच्चों से जुड़ी अनेक संस्थाओं का दौरा किया और उनकी सर्वश्रेष्ठ बातें अपनायीं। बालभवन में रोजाना 4 से 7 बजे के बीच 700 बच्चे आते हैं। वो खेलों के साथ-साथ अनेकों गतिविधियों में भी शरीक होते हैं। गर्मियों की छुट्टियों में बच्चों की संख्या बढ़ कर 1500 हो जाती है।

लेफ्ट, रॉइट, लेफ्ट

बच्चों के लिए व्यायाम जरूरी है, लेकिन पी टी की साधारण कवायदों से बच्चे जल्द ही ऊब जाते हैं। इसलिए व्यायाम में योगासन, जूडो, कराटे और अन्य खेल भी जोड़े गए। कसरत करते समय बच्चे आनंद अनुभव करते हैं। अपने शरीर को हम कितनी अलग-अलग तरह से मोड़ सकते हैं इसकी संभावनाएं खुलती हैं। व्यायाम के समय हम अक्सर जोर-जोर से एक, दो, तीन की गिनती गिनते हैं और अपने हाथों और पैरों को सैनिकों की तरह आगे-पीछे मारते हैं। यह व्यायाम का कितना हिंसक और उबाऊ तरीका है? इस नीरस सैनिक कार्यवाही से बच्चे ऊबेंगे ही। एक बच्चे ने सुझाव दिया, 'हम क्यों न सा, रे, गा, मा की लय पर कसरत करें?'

संगीत के मधुर स्वर कानों को अच्छे लगेंगे। कम-से-कम संगीत के स्वर लेफ्ट, रॉइट, लेफ्ट जैसे कानों पर चोट तो नहीं करेंगे! संगीत के सुरों को आप गुस्से में तो नहीं बोल पाएंगे। कुछ बच्चों ने इसी प्रकार दिनों और महीनों ने नाम गाते-गाते कसरत की तो कुछ ने अपने साथियों के नाम गाए! इस से बच्चों का व्यायाम तो हुआ ही, साथ-साथ उन्होंने लय और गति के बारे में भी बहुत कुछ सीखा।

अलग-अलग खेल

बच्चे अलग-अलग प्रांतों के खेल खेलते हैं। कुछ खेलों में उन्हें बेहद मजा आता है। 'क्वीन ऑफ शीबा' में कोई वस्तु छिपा दी जाती है और बच्चों की दो टीमों को उन्हें जासूसों की तरह ढूंढना होता है। जो टीम पहले खोजती है वही जीतती है। इससे बच्चे आपसी सहयोग सीखते हैं। वे हमेशा चौकन्ने और सर्तक भी रहते हैं। 'राम-राम-भैया' जैसे खेलों में तेजी से दौड़ना पड़ता है और 'शेर-बकरी' जैसे खेलों में सदैव सावधान रहना पड़ता है। कुछ खेलों में स्मरण शक्ति की परीक्षा होती है तो कुछ में अभिनय कौशल काम आता है। बच्चे बालभवन के परिसर के सभी पेड़ों, पक्षियों, तितलियों और कीड़ों को पहचानना सीखते हैं। कभी-कभी बच्चे एम्प्रेस गार्डन और पुणे यूनिवर्सिटी के पेड़ों के निरीक्षण के लिए भी जाते हैं। वे पत्तियां छूते हैं और तनों की छाल पर कागज रखकर उस पर पेंसिल रगड़ कर उनके 'प्रिन्ट' इकट्ठे करते हैं।

10-15 बच्चों के समूह भिन्न-भिन्न गतिविधियां करते हैं - औरेगामी, चित्रकला, मिट्टी की कलाकृतियां, खिलौने बनाना, बाग में काम करना या फिर वे हॉल में स्केटिंग करते हैं। बच्चे 5-6 घंटे ही स्कूल में बिताते हैं। स्कूल से लौटने पर अक्सर घर पर ताला लगा होता है क्योंकि माता-पिता काम पर गए होते हैं। वे आफिस खत्म होने पर शाम को ही घर लौटते हैं। बच्चे अकेले घर पर क्या करें? वे कंप्यूटर गेम्स खेलते हैं या टेलीविजन देखते हैं। यह कोई अच्छी स्थिति नहीं है। बच्चे खाली समय में कुछ अच्छा करें यही उद्देश्य था बालभवन शुरू करने के पीछे।

दीवार पर चित्रकारी

बालभवन की एक दीवार खाली थी। एक चित्रकार को उस बड़ी दीवार पर एक चित्र बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। बच्चों ने चित्रकार को पेंटिंग करते देखा तो उन्हें भी चित्र बनाने का भूत सवार हुआ। उन्होंने भी दीवार पर अपनी कल्पना से चित्र बनाना शुरू किए। बच्चे लगातार पेंटर काका को बुलाते रहे 'मेरा चित्र देखिए! नहीं मेरा देखिए!' पेंटर काका बस दीवार के एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ते रहे और देखते ही देखते बच्चों ने पूरी दीवार पर एक सामूहिक पेंटिंग तैयार कर दी!

कारखानों का दौरा

शनिवार और रविवार के दिन सैर और शैक्षिक भ्रमण के लिए होते हैं। बच्चों को उत्पादक काम दिखाना बालभवन द्वारा आयोजित पिकनिकों की एक खासियत है। दैनिक जीवन में काम आने वाली चीजें कैसे बनती हैं? यह समझना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। राजा बहादुर मिल में बच्चे कपास से कपड़ा बनते हुए देखते हैं। पूना बॉटलिंग प्लांट में बच्चे पानी के शुद्धिकरण से लेकर कोल्ड-ड्रिंक बनते हुए देखते हैं। एक पालक ने बच्चों को अपनी 'टूटी-फ्रूटी' की फैक्ट्री देखने के लिए बुलाया। 'टूटी-फ्रूटी' कच्चे पपीते से बनती है। शुरू में पपीतों को एक बड़ी हौद में नमक के घोल में डुबो कर रखा जाता है। वहां बच्चे सड़ी बदबू के कारण परेशान हो गए। नाक को रूमाल से ढंक कर वो किसी तरह अंदर गए। वहां उन्होंने पपीते के टुकड़ों को रंगीन चाशनी में से निकालकर सुखाते हुए देखा। सड़ी बदबू ने बच्चों का नाक में दम कर डाला। उन्होंने जीवन में कभी भी 'टूटी-फ्रूटी' नहीं चखने की कसम खाई!

जब बच्चे चोरडिया तेल मिल देखने गए तो वहां उन्हें मूमफली के ढेर पर खेलने की अनुमति मिल गई। वो घंटों मूमफली के ढेर पर चढ़ते और फिसलते रहे। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा! पूना बॉटलिंग प्लांट में दर्शकों को कोल्ड-ड्रिंक भेंट करने का रिवाज है। बच्चों को जब कंपनी की इस उदारता का पता चला तो कारखाना देखने का उनका मन एकदम उचट गया। अब प्लांट देखने की बजाए उनका मन केवल कोल्ड-ड्रिंक पीने में था।

उरली-कांचन में जब बच्चों से पके अंगूर तोड़ने के लिए मना किया गया तो एक भी बच्चे ने अंगूर नहीं तोड़े। बगीचे का माली इससे बेहद प्रसन्न हुआ। उसने बच्चों की बहुत तारीफ की अंगूरों के खेतों के बीच बच्चों को टोकरी भर कर अंगूर खाने को दिए!

शहर से रूबरू

बालभवन दस दिन का एक शिविर आयोजित करता है जिसका नाम है 'पुणे दर्शन'। इसमें दो घंटो रोज पैदल चलकर बच्चे पुणे शहर के अनेक दर्शनीय स्थल देखते हैं। चलते-चलते बच्चे रास्ते में दिखने वाले पेड़ों, इमारतों के नामए उनके वास्तु-शिल्प, सड़कों, पुतलों और ऐतिहासिक महत्व के स्थानों के बारे में गपशप लगाते हैं। शनिवार वाडा, आगाखान पैलेस, एम्प्रेस गार्डन, ओशो पार्क, पर्वती हिल, मार्केट यार्ड, कात्रज की झील आदि स्थानों पर बच्चे पैदल जाते हैं। किसी स्थान पर जाने से पहले उसे नक्शे पर खोजा जाता है और फिर जाने का रास्ता तय होता है। इससे बच्चे नक्शे पर दूरी मापने का सही अंदाज सीखते हैं।

इस शिविर में बच्चे बहुत सी बातें सीखते हैं। जैसे भीड़ वाली सड़क पार करना और सड़कों पर सावधानी से चलना। रास्ते में आने वाली सभी बस्तियों, बागों और पुतलों की जानकारी। बस्ती का नाम किस आधार पर पड़ा? अलग-अलग म्यूजियम, वस्तु-संग्रहालय की क्या विशेषताएं हैं। मई में बच्चों को सड़क पर गुलमोहर, पंगारा, सेमल, कचनार के फूलों से लदे पेड़ दिखते हैं। उनसे भी परिचय हो जाता है। जब बच्चे पहली बार एम्प्रेस गार्डन गए तो वहां बहते साफ पानी के नाले से शुरू में तो उन्हें कुछ डर लगा। पर कुछ देर बाद सभी बच्चे उसमें छलांगे और डुबकी लगाने लगे! पुणे यूनिवर्सिटी जाना बच्चों को बेहद भाता है। क्योंकि वहां पर 250 वर्ष पुराना एक 'बॉओबॉब' यानि गोरखचिंच का पेड़ है। पेड़ का तना इतना मोटा है कि छह-सात बच्चे, एक-दूसरे के हाथ पकड़ने के बाद ही उसकी परिधि का आलिंगन कर पाते हैं। यूनिवर्सिटी का परिसर इतना बड़ा है कि बच्चे वहां चलते-चलते थक जाते हैं। बालभवन वापसी की बस पकड़ने से पहले सभी बच्चे पुरानी कैंटीन में बटाटा-वडा अवश्य खाते हैं।

पुणे के बालभवन से प्रेरित होकर पुणे शहर के अलग-अलग हिस्सों में 100 से भी ज्यादा छोटे बालभवन शुरू हुए हैं। काश हमारे हरेक शहर में इस प्रकार के सक्रिय बालभवन होते!